महान देश के महान नागरिक

- डा० भीष्म कुमार
वैज्ञानिक ई

'मेरा भारत महान' कह देने मात्र से यदि भारत महान बन जाता तो सभी ने भी महान बनने के लिये अपने नाम के साथ 'महान' शब्द लगा लिया होता. अतः भारत को महान बनाने के लिये आवयक है कि पहिले इस देश के नागरिक अर्थात भारतवासी महान बनें तब स्वतः ही भारत महान हो जायेगा. आइये, आज गिरते हुए मानवीय मूल्यों एवं राष्ट्रीय चरित्र में हो रही लगातार गिरावट की स्थिति में इस बात का मनन करें कि राम एवं कृष्ण का भारत आज आखिर किस दिश में आगे बढ़ रहा है, तथा नागरिकों में ऐसे क्या गुण होने चाहिये, जिनसे देश महान बनता हैं.

ऊँचा पद पा लेना महानता का प्रतीक नहीं है, अधिक धनवान होने से भी कोई महान नहीं बनता तथा अधिक सन्तान एवं बाहुबल वाले भी महान की श्रेणी में नहीं आते. क्योंकि यदि ऊचॉ पद पाना यदि महानता का प्रतीक होता तो आज अमेरिका जैसे राष्ट्र का प्रत्येक राष्ट्रपति महान होता. जबकि बिल क्लिंटन जैसे भी अमेरिका के राष्ट्रपति हो चुके हैं जिनका खुद अमेरिका की जनता भी सम्मान नहीं करती है. यदि अधिक धनवानों को महानता की पदवी मिल जाती तो शायद वर्तमान समय में घूसघोर, धोखे से दूसरों की सम्पति हड़पने वाले, चौरी डकैती करके सम्पत्ति इक्ट्ठा करने वाले, सफेदपोस नेता व भृष्ट अधिकारी व कर्मचारी तथा सत्ता व पद का दुरुपयोग करके धनवान बनने वाले इत्यादि महान कहलाते. यदि अधिक सन्तान वालों को महान की श्रेणी में माना जाता तो धतराष्ट्र जिनके एक सौ पुत्र तथा एक पुत्री थी, को इतिहास में महामानव की पदवी दी जाती. फिर आखिर ऐसा क्या है, जिससे कोई महान बनता है. चाहे कोई व्यक्ति हो अथवा कोई देश, महानता की बात करने से पहिले आइये हम वर्तमान स्थिति पर एक नजर डाले. आज के युग में लोग येन-केन प्रकारेण उच्च पद को पाना, अधिक से अधिक धन एकत्रित करना तथा बाहुबल को बढ़ाने में ही गौरव का अनुभव करते हैं. लोक-लज्जा का आज कोई स्थान नहीं है. आज हम यह भी भूल गये हैं, कि इतिहास का सबसे अधिक महत्व इसलिये है, कि हमें उससे यह पता चलता है, कि पूर्व में किसने क्या किया तथा उसका परिणाम क्या निकला, जिससे हम अपने क्रिया-कलापों को उसी के अनुसार नियंत्रित करें. यही कारण है कि आज हम राम और कृष्ण के पथ को न अपना कर, रावण, कंस एवं कौरवों के पथ को अपना रहे है, तथा उन्ही जैसे कार्यो को करने में हमें महानता नजर आती हैं. नतीजा हम सभी के सामने है, आज विज्ञान की इतनी उन्नति एवं अपार सुख सुविधाओं के होते हुए भी हम सब निरीह हैं. नित नई समस्याओं, बीमारियों, आतंकवाद, जातिवाद, धर्मवाद, दुर्घटनाओं, बेरोजगारी, घूसखोरी, बाढ़, सूखा तथा आंतरिक व बाहय क्लह एवं युद्धों इत्यादि से हमें जूझना पड़ रहा है. लेकिन, इसके बाद भी हम यह मानने को तैयार नहीं हैं, कि यह सब हमारी गलत सोच एवं गलत कार्यो का ही परिणाम है. आखिर इस सबके लिये दोषी कौन है, मेरे अनुसार सबसे पहिले दोषी माता-पिता हैं, जो कि खुद सच्चे व ईमानदार नागरिक नहीं होते हैं, एवं अज्ञानतावश वह अपनी सन्तान का भी सही मार्गदर्शन नहीं करते. दूसरा स्थान, आज के शिक्षक वर्ग का है, जो कि खुद भटका हुआ है, ऐसी स्थिति में वह विद्यार्थियों का सही दिशा कैसे दे पायेगा ? तीसरा स्थान, हमारे उस विद्वान वर्ग का है, जो कि उच्च शिक्षा प्राप्त करके सरकार इत्यादि में उच्च पदों पर आसीन हैं, तथा समाज व देश में भी जिनका मान-सम्मान है. लेकिन, उनकी सोच केवल अपने व अपने परिवार की उन्नति तक ही सीमित है, तथा समाज व देश के उत्थान में किसी भी प्रकार के योगदान को वह व्यर्थ में समय व धन गंवाना समझते हैं. चौथा स्थान, हमारे समाज के ठेकेदारों व सरकार का है, जो कि इस दिशा में बिल्कुल भी जागरुक नहीं है, तथा उनकी सारी कोशिशें अपनी कुर्सी व पोजीशन बचाये रखने तक ही सीमित हैं. आज के नेताओं से तो कोई उम्मीद ही नहीं की जा सकती, क्योंकि ज्यादातर के समक्ष समाज व देश की भलाई के स्थान पर अपनी भलाई करने का ही

लक्ष्य होता है, आज समाज का रुप भी बहुत विकृत हो चुका है. क्योंकि, आपसी एकता एवं भाईचारे के अभाव में तथा जातिवाद के चलते वह खण्ड खण्ड हो चुका है, तथा बाहुबलियों ने उस पर कब्जा कर लिया हैं.

मूल विषय से थोड़ा हटकर मैं यहाँ व्यक्तिवादी तथा ईश्वरीय अथवा प्राकृतिक व्यवस्था की बात करना चाहूँगा, जिसको जानते तो सभी है, लेकिन शायद जानबूझकर एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर अनदेखा करते रहते हैं, अथवा हमारी नई पीढ़ी इन बातों से अभिनिस है. आजकल लोगों को जो भी क्षणिक रुप से नजर आता है, उसे ही सही मानने लगते है, तथा उसी का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं, जैसे कि घूसखोरी करके धन कमाने वाले, अपने दायित्वों का निर्वाह न करके बिना किसी कार्य के मुफ्त में वेतन लेने वाले, मिलावट व अन्य गलत तरीकों से अधिक मुनाफा कमाने वाले, बाहुबल का प्रयोग कर दूसरों की सम्पत्ति हडपने वाले तथा सत्ता एवं पद का दुरुपयोग करने वाले इत्यादि ही लोगों को सुखी नजर आते हैं, तथा उपरोक्त कार्यो को करने में उन्हें कोई बुराई भी नजर नहीं आती है। समाज भी ऐसे लोगों के ही प्रभाव में रहता हैं. इस सबके बारे में मै आपको बताना चाहूँगा कि, जो कुछ भी हमें दिखाई देता है, वह एक छलावा हैं, एक भ्रम है, तथा वह अर्ध सत्य है पूर्ण सत्य नहीं. क्योकि, हम किसी की जिन्दगी के एक छोटे से पहलू मात्र को देख कर ही निष्कर्ष निकाल लेते है, कि अमुक व्यक्ति तो नम्बर २ की बहुत कमाई करता है, तथा वह बहुत सुखी है, जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत हो सकती हैं - क्योंकि हमें किसी की जिन्दगी के सभी पहतुओं की जानकारी नहीं होती है अतः अर्ध सत्य के आधार पर हम महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल लेते हैं तथा उसका अनुसरण करके बाद में अधोगति को प्राप्त होते हैं. इस बारे में मेरी अपनी राय है कि किसी दूसरे की जिन्दगी से निष्कर्ष निकालने की अपेक्षा अपनी बीती हुई जिन्दगी से हमें निष्कर्ष निकालने चाहिये क्योंकि हमें अपने द्वारा किये हुए प्रत्येक कार्य का पूर्ण ज्ञान होता है तथा उसके क्या परिणाम सामने आये उनकों हम भुगत चुके होते हैं इसमें केवल इस बात का ध्यान रखना होता है कि अच्छें अथवा बुरे परिणामों को आपको केवल अपनी सोच एवं कृत्यों से ही जोड़कर देखने की आवश्यकता होगी, न कि हर बुरे परिणाम के लिये किसी दूसरे को दोषी ठहराना. मै समझता हूँ कि उपरोक्त आंकलन यादि ईमानदारी से किया जाये, तो स्पष्टरुप से यह बात सामने आ जाती हैं, कि जो कुछ भी हमारे साथ घटित हुआ वह हमारे द्वारा सोचे गये एवं किये गये कार्यो के अनुरुप ही था. इस बात को नीचे दिये गये विवरण से और अच्छी तरह समझा जा सकता हैं. यदि हमें औसतन 80 वर्ष का अच्छा एवं सुव्यवथित ढंग से जीवन बिताना हो, तो इसके लिये एक अच्छी प्लानिंग एवं नियमानुसार कार्य करने की आवश्यकता होगी है, अन्यथा हम न ही अच्छे जीवन की कल्पना कर सकते हैं, तथा न ही 80 वर्ष तक जीवित रह सकते है. ठीक उसी प्रकार जो प्रकृति करोड़ों वर्षो से चली आ रही है, तथा जिसे अभी करोड़ों वर्षो तक चलना है, जिसकी प्रत्येक गतिविधि हमारी सोच से कहीं अधिक व्यवस्थित एवं पूर्ण है, उसकी कितने बड़े स्तर की प्लानिंग एवं व्यवस्थायें होगी - यह हमारा छोटा सा मस्तिष्क पूरी तरह से नहीं समझ सकता. अतः यदि कोई अप्राकृतिक ढंग से गलत कार्य करता है तो उसे उसके परिणाम तो भुगतने ही पड़ेगे. यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रकृति अथवा ईश्वरीय शक्ति से बड़ा कोई बनियां इस संसार में नहीं हैं. यदि आपके गलत कार्य का परिणाम शीघ्र ही मिलता है, तो उस पर कम समय के अनुसार ब्याज रुपी दंड भी कम होगा, अन्यथा अधिक देरी होने पर ब्याज की तरह ही दंड बढ़ जायेगा, इसकी गवाही के लिये हमारे इतिहास में अनेकों प्रकरण हैं. इसी लिये कहा जाता है कि ईश्वर के यहाँ देर है पर अन्धेर नहीं - क्योंकि उसकी घड़ी से शायद, हमारा एक वर्ष उसके एक घन्टें के बराबर हैं.

उपरोक्त कथन से यह निश्चित हो जाता है कि जैसी हमारी सोच होगी, वैसे ही हम कर्म करेंगे तथा उसी के अनुसार हमें जीवन यापन करना होगा. अतः जिन देशों के नागरिकों ने कठिन परिश्रम करके अपने समाज व देश की कार्यप्रणालियों का सुव्यवथित ढंग से निर्धारण किया है तथा उनका कडाई से पालन करते है वह आज काफी तरक्की करते हुए अच्छा जीवन यापन कर रहे हैं एवं उनके देश महान देशों की श्रेणी में आते हैं, इसके विपरीत, जिन देशों की जनता अज्ञानता की शिकार है, जो गलत को ही सही मानती है, किसी भी कार्यप्रणाली का पालन न करके चेहरे व स्थिति को देखकर कार्य करते हैं , जिनके नेतागण एवं विद्वान अपनी

स्वार्थ सिद्वि में ही लिप्त है एवं जनता उनके बहकावे में आ जाती है, उन देशों के नागरिक एक निम्नस्तर का जीवन यापन करते हुए एक दूसरे पर दोषारोपण करते रहते है. अतः एक महान देश के नागरिकों में निम्नलिखित गुणों का होना अनिवार्य हैं.

देश -प्रेमः मैं यहॉ देश प्रेम को परिभार्षित नहीं कर रहा. लेकिन, सिर्फ् इतना इंगित करना चाहता हूँ, कि जिस देश के नागरिक कोई कार्य करने से पहिले यह सोचते हैं, कि मेरे इस कार्य से मुझे फायदा होने के साथ साथ मेरे देश पर इसका कितना अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव पडेगा तथा अनुकुल प्रभाव पड़ने की स्थिति में ही कार्य करते हैं, तो वह देश अवश्य ही महान बनेगा.

कर्तव्यनिष्ठाः जिस देश के नागरिक अपने अधिकारों के साथ साथ देश व समाज के प्रति अपने कर्त्यव्यों को भी जानते है तथा निर्वाह बिना किसी लोभ लालच के करते है वह देश व समाज अवश्य ही सदैव प्रगति करता हुआ महान बनता हैं.

स्वतः अनुशासितः जिस देश के नागरिक अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए स्वतः अनुशासित होते हैं, अर्थात स्वतः ही बिना किसी बाहरी प्रभाव के अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं, दूसरे शब्दों में हमें किसी एक की दूसरे के द्वारा निगरानी करने की आवश्यकता नहीं पड़ती तो वह देश अवश्य ही महान हो जाता हैं.

स्वार्थ रहितः ´यहॉ स्वार्थ रहित से यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि इन्सान में बिल्कुल ही स्वार्थ नहीं होना चाहियें बल्कि यहाँ इसका तात्पर्य है कि स्वार्थ केवल आवश्यकतानुसार ही होना चाहिए हमें केवल अपने व अपने परिवार के हितो तक ही सीमित न रहकर, अपने देश व समाज के हितों का भी ध्यान रखना चाहिये अन्यथा अत्यधिक स्वार्थी ताड़ अथवा खजूर के पेड़ की उपमा दी जाती है जिससे उसके बड़े होने से देश व समाज का कोई फायदा ही नहीं पहुँचता. अतः प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने समय से कुछ समय निकाल कर देश व समाज की सेवा सच्चाई व ईमानदारी के बिना उपरोक्त किसी भी गुण का समावेश नहीं हो सकता है. अतः जिस देश के नागरिक सच्चाई एवं ईमानदारी का पालन करते हुए उपरोक्त गुणों से शोभित होते हैं वह देश अवश्य ही महान होता है.

आज हमारे देश में सच्चाई व ईमानदारी की सबसे अधिक कमी है, जिसके कारण हम अन्य आवश्यक गुणों के बारे में तो सोच ही नहीं सकते. ज्यादातर लोग जरुरत से अधिक स्वार्थरत हैं तथा कुछ अज्ञानतावश देशहितों पर कुढ़ाराघात करते रहते हैं. छोटे हमेशा बड़ों का अनुसारण करते हैं. अतः यह आवश्यक है कि जो आज बड़ों की श्रेणी में आते हैं उन्हें अपने प्रत्येक कदम को सावधानी से रखने की आवश्यकता है जिससे आगे आने वाली पीढ़ी को गलत संकेत न जायें. आज आवश्यकता है कि हम सभी अपने-अपने कर्तव्यों का निवार्ह करते हुए भारत देश को महान भारतवर्ष बनायें न कि स्वार्थवश सिर्फ देश की सुविधाओं व सम्पदाओं का उपयोग तो अपने विकास के लिए करें, लेकिन जब देश हित का समय आये अथवा देश व समाज को हमारी आवश्यकता पड़े तब हम इससे अपना दामन छुडा लें. ध्यान रहे ऐसे लोग न तो सम्मान प्राप्त करते है, चाहे वह कितनी ही प्रगति कर लें तथा न ही वह समाज व देश प्रगति करता हे जिसके नागारिक इस प्रकार के होते हैं.

आईये आज हम सब मिलकर इस बात का प्रण करें कि हम अपने देश व समाज की, जिस इकाई से भी जुड़े है, जोकि हमारे एवं हमारे परिवार के भरण-पोषण में सहायक है उसके प्रति पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करेंगे तथा अपने प्रत्येक कार्य द्वारा उसकी मान प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ायेगें.

* * * * *